Faizane Imaam Ja'fare Sadiq (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 234
Weekly Booklet : 234

फ़ैज़ाने इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सफ़हात 21

- इमाम जा'फ़रे सादिक़ का तआ़रुफ़ 03
- 7 वाक़िआ़ते इमाम जा'फ़रे सादिक़ 05
- रजब के कूंडे 16
- इमाम जा'फ़रे सादिक़ के 9 फ़रामीन 20

मज़ारे मुबारक
इमाम जा'फ़रे सादिक़

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	: **फ़ैज़ाने इमाम जा'फ़रे सादिक़** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه
पहली बार	: जुमादल आख़िर **1443** हि., जनवरी **2022** ई.
ता'दाद	: 000
नाशिर	: **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

फ़ैज़ाने इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

येह रिसाला **(फ़ैज़ाने इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه)** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (1)

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़ह़ात का रिसाला "**फ़ैज़ाने इमाम जा'फ़रे सादिक़**" पढ़ या सुन ले, उसे तमाम सह़ाबा व अहले बैत का सच्चा ग़ुलाम बना और उसे इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के प्यारे प्यारे नानाजान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ियामत में शफ़ाअ़त नसीब फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुसल्मान जब तक मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहता है फ़िरिश्ते उस पर रह़मतें भेजते रहते हैं, अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा। (ابن ماجہ، 1/490، حدیث:907)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

ग़ैबी अंगूर और चादरें

ह़ज़रते लैस बिन सा'द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक बार ह़ज के इरादे से मक्कए मुकर्रमा ह़ाज़िर हुवा। नमाज़े अ़स्र अदा करने के बा'द मैं मस्जिदुल ह़राम के क़रीब वाक़ेअ़ पहाड़ जबले अबी क़ुबैस की त़रफ़ चल पड़ा। मैं ने देखा कि एक शख़्स बैठा येह दुआ़ कर रहा था : "**या रब्बि ! या रब्बि !**" यहां तक कि उस की सांस फूल गई। फिर कहने लगा : "**या**

1... येह रिसाला 12 रजबुल मुरज्जब 1441 हि. ब मुत़ाबिक़ 7 मार्च 2020 ई. को होने वाले हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे और 15 रजबुल मुरज्जब 1441 हि. ब मुत़ाबिक़ 10 मार्च 2020 ई. को इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शबे उ़र्स के मौक़अ़ पर होने वाले अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान का तह़रीरी गुलदस्ता है।

अल्लाह ! या अल्लाह !'' यहां तक कि उस की सांस फिर फूल गई, फिर कहा : ''**या ह़य्युु या क़य्यूम !**'' यहां तक कि उस की सांस फूल गई। फिर कहने लगा : ''**या रह़मानु ! या रह़मानु !**'' यहां तक कि उस की सांस फूल गई। फिर ''**या अरहमर्राह़िमीन**'' का विर्द करता रहा ह़त्ता कि उस की सांस फूल गई। जब वोह फ़ारिग़ हुवा तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करने लगा : **या अल्लाह** पाक ! अंगूर खाने की ख़्वाहिश है, मुझे अंगूर खिला दे और मेरी चादर फट गई है मुझे नई चादर अ़ता कर दे। ह़ज़रते लैस बिन सा'द رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक की क़सम ! उस की बात अभी पूरी न हुई थी कि मैं ने एक टोकरी देखी जो अंगूरों से भरी हुई थी ह़ालां कि उन दिनों अंगूरों का मौसिम न था और साथ में दो चादरें भी थीं। जब उस ने खाने का इरादा किया तो मैं ने कहा : मैं भी आप का शरीक हूं जब आप ने दुआ़ की थी तो मैं ने आमीन कहा था। उस ने कहा : आइये, **अल्लाह** पाक का नाम ले कर खाइये और कोई चीज़ बचा कर न रखियेगा। मैं ने आगे बढ़ कर अंगूर खाना शुरूअ़ कर दिये। उन अंगूरों में बीज नहीं थे और मैं ने ऐसे उ़म्दा (या'नी लज़ीज़) अंगूर पहले कभी नहीं खाए थे, लिहाज़ा मैं ने ख़ूब सेर हो कर (या'नी पेट भर कर) खाए मगर टोकरी में से कुछ भी कम न हुवा। फिर मुझे फ़रमाया : इन चादरों में से जो पसन्द हो ले लो। मैं ने कहा : मुझे चादर की ज़रूरत नहीं। फिर वोह कहने लगा : तुम थोड़ी देर छुप जाओ ताकि मैं इन्हें पहन लूं। मैं आड़ में हो गया। उस ने एक चादर को तहबन्द के तौ़र पर इस्ति'माल किया और दूसरी ऊपर ओढ़ ली फिर अपनी उतारी हुई दो चादरें अपने हाथ में लीं और चल दिया। मैं भी उस के पीछे चल पड़ा यहां तक कि जब वोह सफ़ा व मर्वह के मक़ाम पर पहुंचा तो उसे एक आदमी मिला और कहने लगा : ऐ **अल्लाह** पाक के प्यारे

रसूल के चचाज़ाद ! मुझे लिबास पहनाइये, **अल्लाह** करीम ! आप को लिबास पहनाए। उस ने दोनों चादरें मांगने वाले के ह़वाले कर दीं। मैं ने उस आदमी से पूछा : **अल्लाह** आप पर रह़्म फ़रमाए, येह कौन हैं ? उस ने जवाब दिया : येह ह़ज़रते जा'फ़र बिन मुह़म्मद (या'नी इमाम जा'फ़रे सादिक़) رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ हैं। ह़ज़रते लैस رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : इस के बा'द मैं ने आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ को बहुत तलाश किया मगर कहीं न पाया। मुझे आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की जुदाई पर बहुत सदमा हुवा। (الروض الفائق، ص224)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 246)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! देखा आप ने ? सय्यिदों के सरताज, ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ कैसे साह़िबे करामत बुज़ुर्ग थे। आप अहले बैते अत़्हार की आंखों के तारे, बहुत बड़े वलिय्युल्लाह और ज़बरदस्त आ़लिमे दीन थे।

इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का तआ़रुफ़

शहीदे कर्बो बला, राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे हुमाम, सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के पड़पोते अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की विलादत 17 रबीउ़ल अव्वल 80 या 83 हिजरी पीर शरीफ़ के दिन मदीनए पाक में हुई। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह और अबू इस्माईल जब कि लक़ब सादिक़, फ़ाज़िल और त़ाहिर है। (شواہد النبوۃ، ص245, शर्ह़े शजरए

क़ादिरिय्या, स. 58) आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को सच बोलने की वज्ह से "**सादिक़**" के लक़ब से जाना जाता है। या'नी आप इस्म बा मुसम्मा थे जैसा लक़ब था वैसा ही आप का मुबारक अ़मल था।

मुबारक शजरए नसब

हज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वालिदए मोहतरमा का नामे मुबारक हज़रते बीबी उम्मे फ़र्वह बिन्ते क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْهُم है जब कि आप के वालिदे मोहतरम का नामे मुबारक हज़रते इमाम मुहम्मद बाक़िर बिन अ़ली ज़ैनुल आ़बिदीन बिन इमाम हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُم है। या'नी इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वालिदा की तरफ़ से "**सिद्दीक़ी**" और वालिदे मोहतरम की तरफ़ से "हुसैनी सय्यिद" हैं। (اللباب فی تہذیب الانساب، ص229, फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 82)

सहाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम — येह सब है आप ही की तो इनायत या रसूलल्लाह
मैं हूं सुन्नी रहूं सुन्नी मरूं सुन्नी मदीने में — बक़ीए पाक में बन जाए तुर्बत या रसूलल्लाह
शहा ! अ़त्तार पर हर आन रहमत की नज़र रखना — करे दिन रात येह सुन्नत की ख़िदमत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 330, 331, 332)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

शाने इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

हज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ताबेई बुज़ुर्ग हैं, आप ने दो जलीलुल क़द्र सहाबए किराम हज़रते अनस बिन मालिक और हज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا की ज़ियारत की। आप से आप के शहज़ादे हज़रते इमाम मूसा काज़िम, इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा, इमामे मालिक, हज़रते सुफ़्यान सौरी और हज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم जैसे बड़े बड़े बुज़ुर्गों ने फ़ैज़ पाया। (سیر اعلام النبلاء، 6/438، 439)

"उर्से जा'फ़र" के 7 हुरूफ़ की निस्बत से 7 वाक़िआते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ

(1) लज़ीज़ तरीन खजूरें

एक शख़्स का बयान है कि हम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ के साथ ह़ज करने जा रहे थे, रास्ते में हम एक जगह खजूर के सूखे हुए दरख़्तों के पास ठहरे, इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने आहिस्ता से कुछ पढ़ा जो मैं न समझ सका, फिर आप ने उन सूखे दरख़्तों से फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने तुम में जो हमारे लिये रिज़्क़ पैदा फ़रमाया है, उस में से हमें भी खिलाओ, उसी वक़्त मैं ने देखा कि खजूरों के गुच्छे आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ की त़रफ़ झुक रहे थे, आप ने मुझ से फ़रमाया : क़रीब आओ और बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाओ, मैं ने ऐसी मज़ेदार खजूरें इस से पहले कभी नहीं खाई थीं। (شواہد النبوۃ، ص250) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

(2) पचास ह़ज की दुआ़

ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ कैसे मुस्तजाबुद्दा'वात थे (या'नी आप की दुआ़एं क़बूल होती थीं) एक और करामते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ पढ़िये, चुनान्चे एक आदमी ने आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ से दुआ़ के लिये अ़र्ज़ की, कि **अल्लाह** पाक मुझे इतना माल दे कि मैं बहुत से ह़ज करूं, आप رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने दुआ़ की : "ऐ **अल्लाह** पाक! इसे ब कसरत माल अ़त़ा फ़रमा ताकि येह अपनी ज़िन्दगी में "पचास ह़ज" करे। चुनान्चे उसे इतना माल मिला कि उस ने पूरे "पचास ह़ज" किये, जब इकावन मरतबा ह़ज के लिये "मक़ामे जुह़फ़ा" पहुंचा और ग़ुस्ल के लिये (नहर वग़ैरा में) गया

तो पानी की तेज़ मौजें उसे बहा कर ले गईं और वोह उसी में डूब कर फ़ौत हो गया। (شواہدالنبوۃ، ص251) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तुम्हारे मुंह से जो निकली वोह बात हो के रही कहा जो दिन को कि शब है तो रात हो के रही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

(3) मुर्दा जानवर ज़िन्दा कर दिया

ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मक्कए पाक में एक दिन कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में एक औ़रत अपनी गाय के मरने पर रो रही थी, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : क्या तुम चाहती हो कि **अल्लाह** पाक तुम्हारी गाय ज़िन्दा फ़रमा दे ? औ़रत ने अ़र्ज़ की : आप हम से इस त़रह़ मज़ाक़ करते हैं ह़ालां कि मैं पहले ही मुसीबत में हूं। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने औ़रत से फ़रमाया : "मैं तुम से मज़ाक़ नहीं कर रहा" फिर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने दुआ़ फ़रमाई, और उस गाय के सर और पाउं को पकड़ कर हिलाया, वोह जल्दी से उठ खड़ी हुई। (شواہدالنبوۃ، ص249)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

फ़ैज़ाने जा'फ़रे सादिक़ !.....जारी रहेगा !

अ़ज़मते इमामे जा'फ़र !..... मरह़बा ! मरह़बा !

बरकते इमामे जा'फ़र !..... मरह़बा ! मरह़बा !

सदाक़ते इमामे जा'फ़र !..... मरह़बा ! मरह़बा !

शराफ़ते इमामे जा'फ़र !..... मरह़बा ! मरह़बा !

सियादते इमामे जा'फ़र !..... मरह़बा ! मरह़बा !

करामते इमामे जा'फ़र !..... मरह़बा ! मरह़बा !

फ़ैज़ाने जा'फ़रे सादिक़ !.....जारी रहेगा !

(4) गुमशुदा चादर मिल गई

एक शख़्स ने मक्कए पाक में एक चादर ख़रीदी और इरादा किया कि येह चादर हरगिज़ किसी को न दूंगा, बल्कि अपने इन्तिक़ाल के बा'द तबर्रुकन इसी का कफ़न बनाऊंगा, उस का कहना है : जब मैं मैदाने अ़रफ़ात शरीफ़ से मुज़्दलिफ़ा आया तो वोह "चादर" मुझ से गुम हो गई, मुझे बहुत दुख हुवा। जब मैं सुब्ह़ मुज़्दलिफ़ा से मिना शरीफ़ की त़रफ़ आया तो मस्जिदुल ख़ैफ़ शरीफ़ में बैठ गया, अचानक एक आदमी जो ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास से आया था मुझ से कहने लगा : आप को इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बुला रहे हैं, मैं जल्दी से आप की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवा और सलाम अ़र्ज़ कर के एक त़रफ़ बैठ गया, आप ने मेरी त़रफ़ ग़ौर से देख कर फ़रमाया : "क्या तुम येह पसन्द करते हो कि तुम्हें तुम्हारी चादर मिल जाए जो तुम्हारी मौत के बा'द तुम्हें कफ़न का काम दे, मैं ने अ़र्ज़ किया : "ऐ इब्ने रसूलुल्लाह ! वोह तो काफ़ी दिनों से गुम हो चुकी है, मिल जाए तो क्या बात है ! आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने ग़ुलाम को आवाज़ दी, वोह चादर ले आया , मैं ने देखा (तो येह) वोही चादर थी, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "इसे ले लो और **अल्लाह** करीम का शुक्र अदा करो।" (شواہد النبوۃ، ص249) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

(5) जन्नत में घर

"शवाहिदुन्नुबुव्वत" में है : (ताबेई बुज़ुर्ग) ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमते बा बरकत में एक शख़्स दस हज़ार दीनार (या'नी दस हज़ार सोने के सिक्के) ले कर ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ करने लगा :

"हुज़ूर ! मैं ह़ज के लिये जा रहा हूं, आप मेरे इस पैसे से कोई मकान वग़ैरा ख़रीद लीजियेगा ताकि मैं ह़ज से वापसी पर अपनी औलाद को ले कर (वहां) रहना शुरूअ़ कर दूं, फिर ह़ज से वापसी पर वोह शख़्स आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बारगाहे आ़ली में ह़ाज़िर हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : "मैं ने तुम्हारे लिये जन्नत में मकान ख़रीद लिया है, जिस की पहली ह़द हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर, दूसरी ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِيَ اللهُ عَنْه पर, तीसरी ह़द नवासए रसूल इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِيَ اللهُ عَنْه पर, और चौथी ह़द ह़ज़रत इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ عَنْه पर ख़त्म होती है और येह लो मैं ने इसे तह़रीर भी कर दिया है।" येह ख़ुश ख़बरी सुन कर वोह शख़्स बहुत ख़ुश हुवा और ख़त़ ले कर अपने घर चला गया। घर जाते ही वोह शख़्स बीमार पड़ गया, उस ने वसिय्यत की, कि इस ख़त़ को मेरे इन्तिक़ाल के बा'द मेरी क़ब्र में रख देना, घर वालों ने दफ़्न करते वक़्त उस ख़त़ को क़ब्र में रख दिया, दूसरे दिन देखा तो वोही ख़त़ क़ब्र के ऊपर रखा हुवा था और उस के पीछे येह लिखा था : "इमाम जा'फ़रे सादिक़ ने जो वा'दा किया था वोह पूरा हो गया" (या'नी इसे जन्नत में मकाने आ़लीशान मिल गया)। (شواہد النبوۃ، ص251)

(6) मख्खी क्यूं पैदा की गई ?

ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक मरतबा ख़लीफ़ा मन्सूर के दरबार में तशरीफ़ फ़रमा थे कि मख्खियां बार बार ख़लीफ़ा के मुंह पर बैठती थीं ख़लीफ़ा ने तंग आ कर अ़र्ज़ की : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! (येह इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की कुन्यत थी) **अल्लाह** पाक ने मख्खी को क्यूं पैदा फ़रमाया है ? (आप ने ख़लीफ़ा को चोट करने के लिये) इर्शाद फ़रमाया : ताकि ज़ालिमों और मग़रूरों को ज़लील करे।

(حلیۃ الاولیاء، 3/230، رقم:3798)

(7) आ़जिज़ी की अ़ज़ीम मिसाल

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَيْه आ़ली नसब होने के बा वुजूद आ़जिज़ी के पैकर थे। एक मरतबा इमामे आ'ज़म इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَيْه के अ़ज़ीम शागिर्द, बहुत बड़े आ़लिम व सूफ़ी बुज़ुर्ग ह़ज़रते दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَيْه ने आप से अ़र्ज़ की, अहले बैत में से होने की ह़ैसिय्यत से मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइये। लेकिन आप رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَيْه ख़ामोश रहे। दोबारा अ़र्ज़ की, कि "अहले बैत में से होने के ए'तिबार से **अल्लाह** पाक ने आप رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَيْه को जो फ़ज़ीलत बख़्शी है, इस लिह़ाज़ से नसीह़त करना आप के लिये ज़रूरी है।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं तो ख़ुद ख़ौफ़ज़दा हूं कि कहीं क़ियामत के दिन मेरे जद्दे आ'ला (मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मेरा हाथ पकड़ कर येह न पूछ लें कि तू ने ख़ुद मेरी पैरवी का ह़क़ क्यूं अदा न किया ? क्यूं कि नजात का तअ़ल्लुक़ नसब से नहीं आ'माले सालिह़ा (या'नी नेक कामों) से है। येह सुन कर ह़ज़रते दावूदे त़ाई رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَيْه रो पड़े कि वोह हस्ती जिन के जद्दे अमजद **अल्लाह** पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, जब इन के ख़ौफ़े ख़ुदा का येह आ़लम है तो मैं किस गिनती में आता हूं ? (تذکرۃ الاولیاء، 21/1) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

करम से हम पर, इमामे जा'फ़र — *हैं साया गुस्तर, इमामे जा'फ़र*
हमें हो क्यूंकर, इमामे जा'फ़र — *अ़दू का अब डर, इमामे जा'फ़र*
सख़ा के पैकर, इमामे जा'फ़र — *ग़रीब परवर, इमामे जा'फ़र*
ह़या के पैकर, इमामे जा'फ़र — *हमारे रहबर, इमामे जा'फ़र*
तू दूर दिलबर, इमामे जा'फ़र — *ग़मो अलम कर, इमामे जा'फ़र*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

चन्द आ़दाते मुबारका

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की मुबारक त़बीअ़त में "ख़ुश अख़्लाक़ी" थी, मुबारक होंटों पर मुस्कुराहट सजी रहती मगर जब कभी ज़िक्रे मुस्त़फ़ा होता तो (ज़िक्रे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हैबत व ता'ज़ीम के सबब) रंग ज़र्द हो जाता, कभी भी बे वुज़ू "ह़दीसे पाक" बयान न फ़रमाते, नमाज़ व तिलावत में मश्ग़ूल रहते या ख़ामोश रहते, आप की गुफ़्तगू "फ़ुज़ूल गोई" से पाक होती। (شفا،42/2)

तीन इ़बादतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ज़ाहिरी व बात़िनी उ़लूम के जामेअ़ थे, आप रियाज़त व इ़बादत और मुजाहदे में मश्हूर थे। इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का बयान है : मैं एक ज़माने तक आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमते मुबारका में आता रहा, मैं ने हमेशा आप को तीन इ़बादतों में से किसी एक में मसरूफ़ पाया, या तो आप नमाज़ पढ़ते हुए मिलते या तिलावते कु़रआन में मश्ग़ूल होते या फिर रोज़ादार होते। (شفا،42/2)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! आप ने पढ़ा कि अ़ज़ीम आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमा रहे हैं कि मैं ने हमेशा इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को इ़बादत में देखा, ज़रा हम भी अपने बारे में ग़ौर करें कि हमारा कितना वक़्त **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद में गुज़रता है हमारी नमाज़ों की क्या पोज़ीशन है ? क्या हम भी रोज़ाना कु़रआने करीम की तिलावत करते हैं ? आह ! इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़र्ज़ के साथ साथ ख़ूब नफ़्ल रोज़े भी रखें और हम से सिर्फ़ फ़र्ज़ रोज़े भी न रखे जाएं ? ऐ काश !

हमें अपने बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चलना नसीब हो जाए। **अल्लाह** पाक तौफ़ीक़ दे तो फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल की कसरत कीजिये, रोज़ाना कम अज़ कम एक पारे की तिलावत की आ़दत हो जाए तो क्या बात है, बेशक खीर पूरी और कूंडे की नियाज़ ज़रूर कीजिये लेकिन खीर पूरियां पका कर खाना और खिला देना ही इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْہ की महब्बत का दम भरना नहीं, सच्ची महब्बत तो येह है कि हम उन के नक़्शे क़दम पर चलें और उन की त़रह़ नेकियों में भी रग़बत रखें, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ माहे रजब, माहे इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْہ जारी है। जिस से हो सके उसे नफ़्ल रोज़ों की भी ख़ूब ख़ूब कसरत करे।

सूफ़ी कौन ?

ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :"जो शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी ह़ालाते मुबारका के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे वोह सुन्नत पर अ़मल करने वाला है और जो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बात़िनी ह़ालाते मुबारका के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे वोह "सूफ़ी" है।" और बात़िनी ज़िन्दगी से ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْہ की मुराद हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पाकीज़ा अख़्लाक़ और आख़िरत को इख़्तियार करना है लिहाज़ा जो शख़्स आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा से अपने आप को ज़ीनत दे और जिस चीज़ को आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इख़्तियार फ़रमाया उसे इख़्तियार करे, जिस चीज़ में रग़बत रखी उस में रग़बत रखे, जिन चीज़ों से आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने आप को बचाया है उन से बचता रहे और जिन कामों की तरग़ीब दिलाई उन पर अ़मल कर ले तो बेशक वोह गन्दगी से पाको साफ़ हो कर ग़ैर से नजात पा गया और जो शख़्स आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रास्ते से हट कर अपने नफ़्स की पैरवी

करने और अपने पेट व शर्मगाह की ख़्वाहिशात को पूरा करने में मश्ग़ूल रहा तो ऐसा शख़्स सूफ़ी बनने से दूर, बे वक़ूफ़ी में कोशिश करने वाला और आने वाले ख़त़रनाक ह़ालात से ग़ाफ़िल है। (حلیۃ الاولیاء، 1/53)

सिद्क़े सादिक़ का तसद्दुक़ सादिकुल इस्लाम कर

बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वासिते

शर्ह़े शजरा शरीफ़ : येह शे'र सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या के शजरा शरीफ़ का चौथा शे'र है, इस शे'र में सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या के छटे, सातवें और आठवें शैख़े त़रीक़त इमाम जा'फ़रे सादिक़ फिर इन के शहज़ादे इमाम मूसा काज़िम और फिर इन के शहज़ादे इमाम अ़ली रज़ा के वसीले से दुआ़ की गई है कि **या अल्लाह** पाक! तुझे इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के "सिद्क़" (या'नी सच्चाई) का वासित़ा मुझे ईमान की सलामती नसीब फ़रमा और इमाम मूसा काज़िम और इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا के सदक़े मुझ से बिग़ैर ग़ज़ब फ़रमाए राज़ी हो जा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

शाने सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म ब ज़बाने इमाम जा'फ़रे सादिक़ (رَضِیَ اللهُ عَنْهُم)

ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : मैं इन के मुतअ़ल्लिक़ सिर्फ़ बेहतर बात ही कह सकता हूं क्यूं कि मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से उन्हों ने ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللهُ عَنْه से और उन्हों ने नवासए रसूल

ह़ज़रते इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि "अबू बक्र सिद्दीक़ से अफ़्ज़ल किसी इन्सान पर आज तक न सूरज तुलूअ़ हुवा और न ही ग़ुरूब हुवा।" इस के बा'द इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "अगर मैं ने रिवायत में ग़लत़ बयानी की हो तो मुझे कल बरोज़े क़ियामत सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त ह़ासिल न हो और (मैं अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के फ़ज़ाइल क्यूं न बयान करूं कि) मैं तो ख़ुद रोज़े क़ियामत "सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ" की शफ़ाअ़त का त़लब गार हूं।" आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो ह़ज़रात शैख़ैने करीमैन (या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) की फ़ज़ीलत से ना वाक़िफ़ है वोह सुन्नत से ना वाक़िफ़ है, मैं ने अहले बैत में से किसी को नहीं देखा जो इन से मह़ब्बत न रखता हो। मज़ीद फ़रमाते हैं : "बेशक ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का दिल मुशाहदए रबूबिय्यत से भरा हुवा था, उन के दिल में **अल्लाह** पाक के इ़लावा और कोई न था। वोह "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ" का विर्द कसरत से करते और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़बाने मुबारक पर अक्सर "**अल्लाहु अक्बर**" जारी रहता था।" (ریاض النضرۃ، 1/59، 67، 136 ملتقطا)

उस शख़्स से मेरा कोई तअ़ल्लुक़ नहीं

एक शख़्स ने आप से ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर और फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के बारे में पूछा : तो आप ने फ़रमाया : तुम मुझ से उन के बारे में पूछते हो कि जिन्हों ने जन्नत का फल खाया। (سیر اعلام النبلاء، 6/441، رقم:948)

उस शख़्स से मेरा कोई त़अ़ल्लुक़ नहीं जो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا का ज़िक्र ''भलाई'' के साथ न करे। (تاریخ الخلفاء، ص96)

हर सह़ाबिये नबी !..... जन्नती जन्नती
चार याराने नबी !.....जन्नती जन्नती
ह़ज़रते सिद्दीक़ भी !..... जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी !..... जन्नती जन्नती
उ़स्माने ग़नी !..... जन्नती जन्नती
फ़ातिमा और अ़ली !..... जन्नती जन्नती
ह़सन और हुसैन भी !..... जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी !..... जन्नती जन्नती
हर ज़ौजए नबी !..... जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

इमाम जा'फ़रे सादिक़ और मौत की याद

ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इतनी अ़ज़मतो शान के मालिक होने के बा वुजूद मौत को याद करते। आप रात को क़ब्रिस्तानों में तशरीफ़ ले जाया करते और फ़रमाते ऐ क़ब्र वालो ! क्या बात है कि मैं तुम लोगों को पुकारता हूं तो तुम कोई जवाब नहीं देते हो ? फिर आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते : अफ़्सोस ! मेरे और तुम्हारे दरमियान पर्दा हो गया है। लेकिन आयिन्दा मैं भी तुम्हारे ही जैसा हो जाने वाला हूं। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه येही फ़रमाते रहते यहां तक कि सुब्हे सादिक़ हो जाती तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नमाज़े फ़ज्र के लिये मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते। (احیاء العلوم، 5/237)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ इब्ने आदम ! किसी चीज़ के न होने पर क्यूं ग़म करता है ? येह (ग़म करना) उस (चीज़) को तेरे पास वापस न लाएगा और किसी मौजूद चीज़ पर क्यूं "तकब्बुर" करता है ? मौत इस को तेरे हाथ में न छोड़ेगी । (सिरातुल जिनान, 9/748)

लाज़िमी है हर सूरत छोड़ना गुनाहों का भाई मौत से पहले काश ! तू सुधर जाता
ग़ैर के तू फ़ैशन को छोड़ दे मेरे भाई उन की सुन्नतें अपना क्यूं है दर बदर जाता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

पांच त़रह़ के लोग

ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "पांच क़िस्म के आदमियों की सोह़बत इख़्तियार न करो : ﴿1﴾ बहुत झूट बोलने वाला शख़्स, क्यूं कि तुम उस से धोका खाओगे, वोह सराब (रेतीली ज़मीन की वोह चमक जो चांद या सूरज की रोशनी पड़ने से पैदा होती है जिस पर पानी का धोका लगता है या'नी पानी लगती है) की त़रह़ है, वोह दूर वाले को तेरे क़रीब कर देगा और क़रीब वाले को दूर कर देगा । ﴿2﴾ बे वुक़ूफ़ आदमी, क्यूं कि उस से तुम्हें कुछ भी ह़ासिल न होगा, वोह तुम्हें नफ़्अ़ पहुंचाना चाहेगा लेकिन नुक़्सान पहुंचा बैठेगा । ﴿3﴾ कन्जूस शख़्स, क्यूं कि जब तुम्हें उस की ज़ियादा ज़रूरत होगी तो वोह दोस्ती ख़त्म कर देगा । ﴿4﴾ बुज़दिल आदमी, क्यूं कि येह मुश्किल वक़्त में तुम्हें छोड़ कर भाग जाएगा । ﴿5﴾ फ़ासिक़, क्यूं कि वोह तुम्हें एक लुक़्मे या इस से भी कम क़ीमत में बेच देगा, किसी ने पूछा कि लुक़्मे से कम क्या है ? आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : लालच रखना और उसे न पाना । (सिरातुल जिनान, 4/258)

ख़ौफ़ से ह़िफ़ाज़त का नुस्ख़ा

वालिदे आ'ला ह़ज़रत, अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मन्क़ूल है : जो शख़्स इज़्ज़ (या'नी बे बसी) के वक़्त पांच बार "يَارَبَّنَا" कहे, **अल्लाह** पाक उसे उस चीज़ से जिस का ख़ौफ़ रखता है, अमान बख़्शे और जो चीज़ चाहता है, अ़ता फ़रमाए। (फ़ज़ाइले दुआ, स. 71) "يَارَبَّنَا" का मत़लब है ऐ हमारे परवर्दगार।

रजब के कूंडे

सदरुश्शरीअ़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : माहे रजब में बा'ज़ जगह ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه को ईसाले सवाब के लिये पूरियों के कूंडे भरे जाते हैं येह भी जाइज़ मगर इस में भी उसी जगह खाने की बा'ज़ों ने पाबन्दी कर रखी है येह बेजा पाबन्दी है। इस कूंडे के मुतअ़ल्लिक़ एक किताब भी है जिस का नाम "दास्ताने अ़जीब" है, इस मौक़अ़ पर बा'ज़ लोग इस को पढ़वाते हैं इस में जो कुछ लिखा है उस का कोई सुबूत नहीं वोह न पढ़ी जाए फ़ातिह़ा दिला कर ईसाले सवाब करें। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, 3/643) इसी त़रह़ "**दस बीबियों की कहानी**", "**लकड़हारे की कहानी**" और "**जनाबे सय्यिदह की कहानी**" सब मन घड़त क़िस्से हैं इन को न पढ़ा करें, इस के बजाए सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ लिया करें कि (ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़) दस क़ुरआन ख़त्म करने का सवाब मिलेगा। येह भी याद रहे कि कूंडे ही में खीर खाना, खिलाना ज़रूरी नहीं दूसरे बरतन में भी खा और खिला सकते हैं और इस को घर से बाहर भी ले जा सकते हैं। बेशक नियाज़ व फ़ातिह़ा की अस्ल या'नी बुन्याद ईसाले सवाब है और कूंडे की नियाज़ ईसाले सवाब की एक क़िस्म है। ईसाले सवाब (या'नी सवाब पहुंचाना)

क़ुरआने करीम व अह़ादीसे मुबारका से साबित है, ईसाले सवाब दुआ़ के ज़रीए़ भी किया जा सकता है और खाना वग़ैरा पका कर उस पर फ़ातिह़ा दिला कर भी। इस को ना जाइज़ कहना शरीअ़त पर इफ़्तिरा (या'नी तोहमत बांधना) है। ना जाइज़ कहने वाले पारह 7 सूरतुल माइदह की आयत नम्बर 87 में बयान कर्दा हुक्मे इलाही से इ़ब्रत पकड़ें। चुनान्चे इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿۸۷﴾ (پ7، المائدہ:87)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! ह़राम न ठहराओ वोह सुथरी चीज़ें कि **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये ह़लाल कीं और ह़द से न बढ़ो। बेशक ह़द से बढ़ने वाले **अल्लाह** को ना पसन्द हैं।

फ़रमाने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

مَارَاٰهُ الْمُسْلِمُوْنَ حَسَناً فَهُوَ عِنْدَ اللهِ حَسَنٌ या'नी वोह चीज़ जिस को मुसल्मान (अहले इ़ल्म व अहले तक़्वा) अच्छा समझें वोह **अल्लाह** के नज़्दीक भी अच्छी है। (مسند امام احمد، 2/16، حدیث:3600)

मुसीबतें दूर होती हैं

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की फ़ातिह़ा करे, (कि इस की बरकत से) बहुत अड़ी (या'नी अटकी) हुई मुसीबतें (दूर हो) जाती हैं। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 133)

मज़ेदार खीर जमाने का त़रीक़ा

ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ईसाले सवाब के लिये मुसल्मानों में कूंडे राइज हैं, कूंडों के राइज होने की ह़िक्मत मैं ने पढ़ी तो

नहीं है अलबत्ता मेरा तजरिबा येह है कि कोरी मिट्टी के कूंडे जिस पर पालिश न हुई हो, उस में मसाम होते हैं, उस में खीर जमाने से खीर लज़ीज़ होती है। बा'ज़ किचन वाले कोरी मिट्टी की छोटी छोटी पियालियों में खीर जमा कर देते हैं, जिन पर पालिश नहीं हुई होती, उन में तय्यार की गई खीर बड़ी Tasty होती है। अगर स्टील के बरतन में जमाएं तो उस का Taste (ज़ाएक़ा) वोह नहीं होता जो कोरी मिट्टी के बरतन में होता है। राहे ख़ुदा में दी जाने वाली चीज़, नियाज़ और फ़ातिहा जितनी लज़ीज़ चीज़ पर होगी उतना ही सवाब ज़ियादा होगा और मुसल्मान के दिल में ख़ुशी ज़ियादा होगी। कूंडों की नियाज़ जिस ने शुरूअ़ की होगी वोह इन चीज़ों को समझता होगा फिर चलते चलते लोग कूंडों की हिक्मत भूल गए और नाम बाक़ी रह गया है। इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नियाज़ किसी भी ह़लाल चीज़ पर कर सकते हैं। कुछ पकाए, खाए बिग़ैर फ़क़त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब किया जा सकता है। ईसाले सवाब के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना का रिसाला ''फ़ातिहा का त़रीक़ा'' पढ़ लीजिये।

रजब के कूंडे किस तारीख़ को करें

पूरे माहे रजब में बल्कि सारे साल में जब चाहें ईसाले सवाब के लिये कूंडों की नियाज़ कर सकते हैं, अलबत्ता मुनासिब येह है कि 15 रजबुल मुरज्जब को ''रजब के कूंडे'' किये जाएं क्यूं कि येह आप का यौमे उ़र्स है जैसा कि फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत जिल्द 2 सफ़ह़ा 265 पर है : ''ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه की नियाज़ 15 रजब को करें कि ह़ज़रत का विसाल 15 ही को हुवा है।''

दिन मुक़र्रर करना

वस्वसा : तीजा, चालीसवां, ग्यारहवीं, बारहवीं और कूंडे वग़ैरा के नाम से ईसाले सवाब के दिन क्यूं मख़्सूस कर लिये गए हैं ?

जवाबे वस्वसा : ईसाले सवाब के लिये शरीअ़त में कोई मुद्दत और वक़्त मुतअ़य्यन करना (या'नी मुक़र्रर करना) ज़रूरी नहीं, अलबत्ता दिन वग़ैरा मुक़र्रर करने में शर्अ़न ह़रज भी नहीं, वक़्त मुक़र्रर करना दो त़रह़ है ﴾1﴿ **शर्ई :** शरीअ़त ने किसी काम के लिये वक़्त मुक़र्रर फ़रमाया हो, मसलन क़ुरबानी, ह़ज वग़ैरा। ﴾2﴿ **उ़र्फ़ी :** शरीअ़त की जानिब से वक़्त मुक़र्रर न हो लेकिन लोग अपनी और दूसरों की सहूलत और याद दिहानी या किसी ख़ास मस्लह़त के लिये कोई वक़्त ख़ास कर लें, जैसे आज कल मसाजिद में नमाज़ों की जमाअ़त के लिये अवक़ात मख़्सूस करना वग़ैरा ह़ालां कि पहले जमाअ़त के लिये वक़्त तै़ नहीं होता था जब नमाज़ी इकठ्ठे हो जाते जमाअ़त खड़ी कर दी जाती थी। बल्कि बा'ज़ कामों के लिये तो ख़ुद सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वक़्त मुक़र्रर फ़रमाया नीज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से भी ऐसा करना साबित है मसलन : ﴾1﴿ हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शुहदाए उ़हुद رَضِیَ اللهُ عَنْهُم की ज़ियारत के लिये सरे साल (या'नी साल के आख़िर) का वक़्त मुक़र्रर फ़रमा लिया था। ﴾2﴿ सनीचर (या'नी हफ़्ते) के दिन सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मस्जिदे क़ुबा में तशरीफ़ लाना ﴾3﴿ और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه से दीनी मुशावरत के लिये वक़्ते सुब्ह़ो शाम की ता'यीन ﴾4﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه ने वा'ज़ो तज़्कीर (या'नी दर्सो बयान) के लिये पन्ज शम्बा (या'नी जुमे'रात) का दिन मुक़र्रर किया। ﴾5﴿ और उ़लमा ने सबक़ शुरूअ़ करने के लिये बुध का दिन रखा।

(फ़तावा रज़विय्या, 9/585, 586 मुल्तक़त़न)

"फ़ैज़ाने जा'फ़र" के 9 हुरूफ़ की निस्बत से 9 फ़रामीने इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

﴾1﴿ **अल्लाह** तुम्हें किसी ने'मत से नवाज़े और तुम उस पर हमेशगी चाहो तो उस पर ज़ियादा से ज़ियादा शुक्र अदा करो। (حلیۃ الاولیاء، 3/225، رقم:3783)

﴾2﴿ अगर तुम्हें रिज़्क़ में ताख़ीर महसूस हो तो इस्तिग़फ़ार (या'नी اَسْتَغْفِرُاللّٰه) की कसरत करो। (حلیۃ الاولیاء، 3/225، رقم:3783)

﴾3﴿ **अल्लाह** पाक ने दुन्या को हुक्म इर्शाद फ़रमाया : ऐ दुन्या ! जो मेरी इबादत करे तू उस की ख़िदमत कर और जो तेरी ख़िदमत करे तू उसे थका दे। (حلیۃ الاولیاء، 3/226، رقم:3785)

﴾4﴿ सदक़े के ज़रीए रिज़्क़ में इज़ाफ़ा और ज़कात के ज़रीए अपने मालों को महफ़ूज़ कर लो। (حلیۃ الاولیاء، 3/227، رقم:3792)

﴾5﴿ **अल्लाह** पाक ने सूद को इस लिये ह़राम किया ताकि लोग भलाई करने से न रुक जाएं। (حلیۃ الاولیاء، 3/226، رقم:3789)

﴾6﴿ **अल्लाह** पाक फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाले को मह़रूम कर देता है। (حلیۃ الاولیاء، 3/227، رقم:3792)

﴾7﴿ दीन में लड़ाई झगड़े से बचो कि येह दिल को मसरूफ़ रखता और निफ़ाक़ (या'नी मुनाफ़क़त) पैदा करता है। (حلیۃ الاولیاء، 3/230، رقم:3799)

﴾8﴿ मियाना रवी इख़्तियार करने वाला तंगदस्त (या'नी ग़रीब) नहीं होता। (حلیۃ الاولیاء، 3/227، رقم:3792)

﴾9﴿ परहेज़ गारी से अफ़्ज़ल कोई ज़ादे राह (या'नी सामाने सफ़र) नहीं, ख़ामोशी से बेहतर कोई चीज़ नहीं, जहालत से बढ़ कर कोई नुक़्सान देह दुश्मन नहीं और झूट से बड़ी कोई बीमारी नहीं। (سیر اعلام النبلاء، 6/444)

हुब्बे सादात ऐ ख़ुदा दे वासित़ा अहले बैते पाक का फ़रियाद है
आह ! सिब्त़े मुस्त़फ़ा फ़रियाद है हाए ! इब्ने मुर्तज़ा फ़रियाद है
बहरे ज़ैनब बे ह़याई का हुज़ूर ख़ातिमा हो ख़ातिमा फ़रियाद है
ह़ाल है बेह़ाल शाहे करबला आप के अ़त्तार का फ़रियाद है

विसाले बा कमाल

15 रजबुल मुरज्जब 148 हि. को किसी बद बख़्त ने ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ज़ह्र दिया जो आप की शहादत का सबब बना। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मज़ार शरीफ़ जन्नतुल बक़ीअ़ में अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ है। (شواہد النبوۃ، ص245, शर्हे शजरए क़ादिरिय्या, स. 59) **अल्लाह** पाक ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर अपनी करोड़ों रह़मतों का नुज़ूल फ़रमाए, और हमें इन की ख़ूब बरकतें इनायत करे। ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नियाज़ खाने के साथ साथ नमाज़ और दीगर नेकियों का भी एहतिमाम फ़रमाइये और गुनाहों से बच कर अपनी आख़िरत संवारने वाले काम कीजिये।

करम से हम पर, इमामे जा'फ़र हैं साया गुस्तर, इमामे जा'फ़र
हमें हो क्यूंकर, इमामे जा'फ़र अ़दू का अब डर, इमामे जा'फ़र
सख़ा के पैकर, इमामे जा'फ़र ग़रीब परवर, इमामे जा'फ़र
ह़या के पैकर, इमामे जा'फ़र हमारे रहबर, इमामे जा'फ़र
तू दूर दिलबर, इमामे जा'फ़र ग़मो अलम कर, इमामे जा'फ़र

मन्क़बत इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

इमामे जा'फ़रे सादिक़, मुरादे अहले यक़ीं
सुलूको इश्क़ की मन्ज़िल है जिन के ज़ेरे नगीं

अमीरे बज़्मे शरीअ़त, मुरीदे शाहे नजफ़
शुआ़ए मेह्रे रिसालत, मताए़ इ़ल्मो यक़ीं
वोही हैं मर्कज़े उम्मीदे नक़्शबन्दो इ़राक़
हैं उन के फ़ैज़ के जोया तमामे अहले ज़मीं
उन्ही के नूरे विलायत से कूफ़ा व बग़्दाद
फ़िक़्ह व इ़ल्मो शरफ़ के हैं ताबदार नगीं
रशीद वारिसे आ़लम नवाज़ के सदक़े
हैं साहिबाने त़रीक़त के हम भी ह़ल्क़ा नशीं

मिल्लत के रहनुमा

मिल्लत के रहनुमा हैं, ह़ज़रत इमामे जा'फ़र सरदारे औलिया हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
किरदार में झलक है, अन्वारे मुस्त़फ़ा की नूरानी आईना हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
सीरत है उन की रोशन, आक़ा की सुन्नतों से **अल्लाह** कि रिज़ा हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
सीना ब सीना पहुंची, ह़सनैन की विरासत फ़रज़न्दे मुर्तज़ा हैं, ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
उन के गुले अ़मल से, महकी है बज़्मे तक़्वा सुल्त़ाने अस्फ़िया हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
अरबाबे ह़क़ का हादी, हर इक क़दम है उन का इक जल्वए हुदा हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
कौनैन की बुलन्दी, है उन के नक़्शे पा में महबूबे मुस्त़फ़ा हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
उन से हुई दोबाला, सादात की तजल्ली इक नय्यरे सफ़ा हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
सिद्दीक़ के करम से, उन का लक़ब है सादिक़ फ़ारूक़ की अ़त़ा हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
कूंडे का येह तबर्रुक दिलताबो जां फ़िज़ा है ईमान की ज़िया हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
हस्ती के फूल सारे, अब तक महक रहे हैं गुलज़ारे इत्तिक़ा हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
है उन के बाग़ियों को, दारैन का अंधेरा नूरे दिले वफ़ा हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र
जो कुछ भी उन से मांगा, हम को मिला, फ़रीदी उ़स्मान की सख़ा हैं ह़ज़रत इमामे जा'फ़र

तहरीरे अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ